14/ 04 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

श्रेष्ठ तकदीर की तस्वीर बनाने का अनुभव

➢➢ साक्षीदृष्टा स्थिती

➳ _ ➳ ज्ञान के दिव्य नेत्र से मैं इस सृष्टि को देख रही हूँ

→ एक विशाल रंगमंच

→ एक नाटकशाला

→ बेहद का नाटक चल रहा है

■ जैसे-जैसे इस नाटक में जिसका पार्ट है अपने-अपने समय अनुसार वो आत्मा परमधाम से नीचे आ रही है और मनुष्य शरीर धारण कर अपना पार्ट बजा रही है

■ जिस आत्मा को जैसा पार्ट मिला है वो अपने उस पार्ट को एकदम एक्यूरेट बजा रही है।

• ➳ _ ➳ एवरेडि बनना है

→ यह नाटक अब पूरा हो रहा है

→ सब पार्टधारियों को अब वापिस अपने धाम लौटना है

→ यह पुरानी दुनिया अब जल्दी ही समाप्त होनी है

■ अब हमें इस पुरानी दुनिया से उपराम रहने का पुरुषार्थ अवश्य करना चाहिए

■ नही तो देह और देह की इस झूठी दुनिया के चक्रव्यूह में फंस होंगें

■ अपनी तकदीर को लकीर लगाकर बैठेंगे

■ और इस बेहद नाटक में फिर कल्प - कल्प के लिए हमारा ऐसा ही पार्ट निर्धारित हो जायेगा

➳ _ ➳ चलते फिरते लाइट हाउस बनना

■ इस देह और देह की इस दुनिया से जुड़ा हर सम्बन्ध नश्वर और दुख देने वाला ही है

■ भगवान के साथ जुड़ा हर सम्बन्ध अपरमअपार सुख देने वाला है

→ यह स्मृति आते ही मन में इस पुरानी दुनिया के लिये वैराग्य उतपन्न होने लगता है

→ मन अपने प्यारे बाबा की तरफ खिंचने लगता है

→ मन बुद्धि देह और देह की दुनिया से उपराम हो कर शिव पिता पर एकाग्र हो जाते हैं

→ परमधाम से परमात्म लाइट सीधी मुझ आत्मा के साथ आकर कनेक्ट हो गई हैं

→ शक्तियों का तेज करंट मुझ आत्मा में प्रवाहित हो रही है

→ अब मैं आत्मा देह से निकल कर इस लाइट के साथ-साथ ऊपर जा रही हूँ

■ यह परमात्म लाइट मुझे खींच कर 5 तत्वों की इस दुनिया से पार ले कर जा रही है

■ अब मैं सर्वशक्तियों की इस लाइट के साथ पहुँच गई हूँ परमधाम उनके पास

■ अनन्त शक्तियों का पुंज, वो पॉवर हाउस मेरे शिव पिता परमात्मा अब मेरे बिल्कुल समीप है

→ उनकी समस्त पॉवर उनकी सर्वशक्तियों की किरणों के रूप में मुझ आत्मा पर पड़ रही हैं

→ मुझ आत्मा की बैटरी चार्ज हो रही है

→ मैं लाइट हाउस बनती जा रही हूँ

■ परमात्म लाइट स्वयं में भर कर मैं अपने आप को बहुत ही शक्तिशाली अनुभव कर रही हूँ

■ ऊर्जा का भण्डार बन, वापिस साकारी लोक में आ कर अपने साकारी तन में विराजमान हो कर इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर अब मैं अपना पार्ट फिर से बजा रही हूँ

. ■ लाईट हाउस बन हरेक को सही राह दिखा रही हूँ

■ बाप की श्रीमत पर अच्छी रीति चल कर श्रेष्ठ तकदीर की तस्वीर बना रही हूँ